बिहार सरकार
पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पशुओं पर प्लास्टिक/पोलिथीन का दुष्प्रभाव

पशुधन द्वारा
जीवन में गुणात्मक सुधार

पोलिथीन के अत्यधिक उपयोग या दुरूपयोग ने आज पशुओं में एक ज्वलंत गम्भीर एवं सोचनीय स्वास्थ्य संबंधी समस्या उत्पन्न कर दी है। पोलिथीन एक ऐसी चीज है जिसे इंसान ने बनाया तो अवश्य है पर इसे खत्म नहीं कर पा रहा है। प्लास्टिक या इससे बने उत्पाद विशेष रूप से पोलिथीन दुधारू पशुओं जैसे गाय, भैंस आदि जानवरों के लिए बेहद खतरनाक है। पोलिथीन खाने की वजह से बड़ी संख्या में पशुओं की मृत्यु हो रही है।

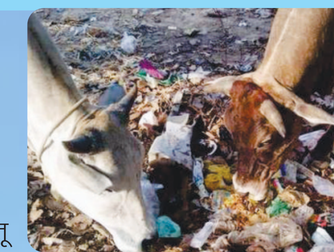

पोलिथीन के पशुओं के शरीर में प्रवेश करने के स्त्रोत

- हल्का होने के कारण पोलिथीन का दूरदराज के खेत, खलिहानों एवं चारागाहों में पहुँच जाना।
- बचे हुए भोजन, सब्जियों के पत्ते एवं अन्य किचेन वेस्ट को पोलिथीन के थैले में बाँधकर कूड़ेदान या सड़क के किनारे फेंक देना।
- शादी–विवाह एवं अन्य समारोहों, आयोजनों आदि में भी पोलिथीन से बनी बैगों में बचे हुए खाद्य पदार्थ आदि को ऐसे ही फेंक दिया जाना।
- विभिन्न मंदिरों/धार्मिक स्थलों के किनारे नदियों में पोलिथीन में भरकर फल के छिलके, हरे पत्ते, भोज्य पदार्थ आदि को बहा दिया जाना जो कई किलोमीटर तक बहकर उस जगह पर जमा हो जाता है जहाँ विभिन्न पालतू एवं अन्य जंगली जानवर इसे खा लेते हैं एवं दूषित पानी को पी लेते हैं।

पोलिथीन के अवगुण

- पोलिथीन का सबसे बड़ा अवगुण यह है कि वह पर्यावरण में गलता नहीं है।
- इसको गलकर समायोजित होने में तीन सौ से पाँच सौ वर्ष तक का समय लग सकता है।
- 40 माइक्रोन से नीचे वाले पोलिथीन का प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि ये विषैले रसायन भी छोड़ते हैं। ये रसायन पशु के रक्त में समाहित हो जाते हैं जिससे पशु में विषाक्तता हो सकती है।

पशुओं की पाचन क्रिया

हमारे पशु विशेषकर दुधारू पशु अखाद्य पदार्थ को खाद्य पदार्थ से छांटकर अलग नहीं कर पाती हैं। खाने की सामग्री के साथ–साथ अन्य चीजें जैसे– कागज, सूई, काँटी, कपड़ा, पोलिथीन आदि भी ग्रहण कर लेते हैं। जब पशु पोलिथीन खा लेते हैं तो जल्द या अचानक उनकी मौत नहीं होती है बल्कि पशुओं की पाचन संबंधी समस्याएँ उत्पन्न होने लगती है। पोलिथीन चिकना, लचीला एवं स्वादरहित होता है जिसे पशु आसानी से अन्य सामग्रियों के साथ इसे निगल लेते हैं।

पोलिथीन का पशुओं के शरीर में दुष्प्रभाव

- पोलिथीन पशुओं के पेट/आँत में जाकर इकटठ़ा हो जाता है, कभी–कभी गोबर से बाहर आ जाता है नहीं तो अंदर ही चिपक जाता है।
- लंबे समय के सेवन से पशुओं के पेट में पोलिथीन धीरे–धीरे जमा होते जाता है एवं धीरे–धीरे जमा होकर कड़ा गेंद या रस्से का रूप ले लेता है।
- जैसे–जैसे समय बीतता है पेट की जगह कम होते जाती है। इससे पशु की पाचन क्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगता है।
- पशुओं को पाचन संबंधी समस्याएँ जैसे भूख न लगना, दस्त एवं गैस (अफरा) जैसी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न होने लगती है। धीरे–धीरे पशुओं का स्वास्थ्य खराब होने लगता हैं। पशु बेचैनी महसूस करता है एवं पेट दर्द की भी शिकायत होती है।
- पोलिथीन पशुओं के लिए साइलेन्ट किलर (Silent Killer) के रूप में कार्य करता है।

उपचार

- प्रथम दृष्टया ईलाज हेतु इस तथ्य की जानकारी नहीं हो पाती है कि बीमारी का कारण पोलिथीन है एवं वह कितनी मात्रा में इसके अंदर है। अंततः पशु कमजोर होने लगता है, दुग्ध उत्पादन घटने लगता है एवं पशुपालकों को आर्थिक क्षति होने लगती है। जब किसी पशु के पेट में प्रचुर मात्रा में पोलिथीन इकट्ठा हो जाता है तो अन्य बीमारियों की तरह इसका कोई दवा, सूई, गोली या चूरण आदि से उपचार नहीं किया जा सकता है। पोलिथीन एवं इसके साथ अन्य सामग्रियों को ऑपरेशन के द्वारा पेट से निकालना ही इसका एकमात्र ईलाज है।

सुझाव

''ईलाज से बेहतर है बचाव'' के सिद्धांत को अपनाते हुए पशुओं में पोलिथीन के प्रकोप को रोकने के लिए जरूरी कदम उठाने की जरूरत है। हमें अपने चारों तरफ पोलिथीन मुक्त समाज बनाने की आवश्यकता है। हमें पोलिथीन का विकल्प ढूँढने की भी आवश्यकता है। जनमानस को जागरूक करने पर ही हम इस भयावह स्थिति से अपने एवं पशुओं के चारों तरफ फैले पोलिथीन के दुष्प्रभाव से मुक्ति पा सकते हैं।

- खाद्य पदार्थों, हरी सब्जी के छिलके आदि को पोलिथीन में बंद कर सड़क किनारे, रेल पटरी के किनारे या खेत–खलिहान, नदी–तालाब में या उनके किनारे नहीं फेंकना चाहिए।
- पोलिथीन के कैरी बैग एवं लिफाफे पर कानूनी रूप से लगाए गए प्रतिबंध का पालन किया जाना चाहिए। पोलिथीन का प्रयोग कम–से–कम या बिल्कुल नहीं किया जाना चाहिए एवं सही ढंग से उसका निष्पादन करना चाहिए।
- यथासंभव अपने पशुओं को ऐसे स्थानों के आस–पास नहीं चरने देना चाहिए जहाँ पोलिथीन की बहुलता वाले कचड़े हों। सड़क किनारे आवारा पशुओं में इसका खतरा कुछ ज्यादा ही होता है। पशुपालकों को अपने पशुओं को आवारा नहीं छोड़ना चाहिए।

इस तरह पोलिथीन मुक्त समाज बनाकर हम अपने पशुधन के स्वास्थ्य की रक्षा कर पाएँगें एवं पशुधन विकास के साथ नए भारत एवं राष्ट्र का निर्माण कर पाएँगें।

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार, पटना द्वारा जनहित में प्रचारित